वी.सी.डी. नं.–1387
ता.12.11.10, बामोरी (राजस्थान)

आत्मा का परिचय

ओम् शांति! एक–2 से पूछा जाए कि तुम कौन हो? तो कोई बताएगा हम किसान हैं, कोई बताएगा हम बूढ़े हैं, कोई बताएगा हम आदमी हैं, कोई बताएगा हम औरत हैं, कोई बताएगा हम बच्चा हैं, कोई कहेगा हम डॉक्टर हैं, कोई कहेगा मास्टर हैं; लेकिन उनसे पूछा जाए कि तुम हमेशा यही हो जो तुमने बताया? जब पैदा हुए थे तब डॉक्टर और मास्टर थे क्या? नहीं थे। आखिर क्या हैं वह कोई नहीं जानता। सब अपनी देह के बारे में बताएँगे, देह का ऑक्युपेशन बताएँगे, देह की उम्र के हिसाब से बताएँगे, स्त्री या पुरुष के हिसाब से बताएँगे। ये कोई नहीं जानता कि हम सदाकाल में क्या हैं। यह बात इस सृष्टि का मालिक, एक ही परमपिता–परमात्मा आकर के बताते हैं। कहते हैं कि तुम सब बिंदु–2 आत्माएँ हो। इसलिए भारतवर्ष में माथे पर बिंदी लगाते हैं। तुम आत्मा हो, आत्मिक स्थिति में टिकी रहने वाली हो तो टीका लगाते हो। तुम देह नहीं हो। बूढ़ा कहेगा मैं बूढ़ा हूँ। वह बूढ़ा तो अब हुआ, पहले तो जवान था, उससे पहले तो बच्चा था ना। तो तुम बदलने वाले तो नहीं हो। बच्चा था तब भी आत्मा था, बूढ़ा हुआ तब भी आत्मा है, पैदा हुआ था तब भी आत्मा है और सदा ही आत्मा है। आत्मा ये शरीर छोड़ देगी तो भी आत्मा रहेगी। किसी माता के गर्भ से जाकर जन्म लेगी। तो आत्मा सदाकाल है। आत्मा कभी मरती नहीं है। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है। हाँ, आत्मा जन्म–मरण के चक्र में आती है और हरेक आत्मा में अपना–2 पार्ट भरा हुआ है। जन्म–जन्मान्तर जो पार्ट बजाया है, वो आत्मा के अन्दर भरा हुआ है। इतनी छोटी–सी आत्मा स्टार मिसल, बिंदी मिसल वह ऐसा वण्डरफुल रिकॉर्ड है, जिसमें जन्म–जन्मान्तर का पार्ट भरा हुआ है। आत्मा कभी स्त्री चोला लेकर के पार्ट बजाती है, कभी पुरुष चोला लेकर के पार्ट बजाती है। ये पार्ट सदैव चलता ही रहता है।

अब सवाल ये होता है कि दुनियाँ में जन्म लेने वाली आत्माओं की संख्या बढ़ती है या घटती भी है? (किसी ने कहा– बढ़ती है।) बढ़ती है! तो ये कहाँ से आ रही हैं इतनी आत्माएँ? दुनियाँ तो एक ही है। इस दुनियाँ में, देश–देशान्तर में आत्माओं की जो संख्या बढ़ रही है, इतने मनुष्य बढ़ रहे हैं, मनुष्य ही नहीं पशु, पक्षी, कीड़े–मकोड़े, पतंगे सबकी आत्माएँ बढ़ रही हैं, घटती नहीं हैं। मक्खी–मच्छर मारने की कितनी कीटनाशक दवाइयाँ छिड़की जाती हैं; इनकी संख्या बढ़ रही है। कहाँ से आती हैं ये आत्माएँ? इन आत्माओं के रहने का एक आत्मलोक है, जिसे कहते हैं– 'परमधाम', 'ब्रह्मलोक'। अंग्रेज़ लोग उसे कहते हैं– 'सोल वर्ल्ड'। सोल मतलब आत्मा। मुसलमान कहते हैं– 'अर्श'। वहाँ आत्माएँ भी रहती हैं और आत्माओं का बाप परमपिता–परमात्मा भी रहता है। मुसलमान उसे खुदा कहते हैं। अल्लाह कहते हैं। अंग्रेज़ लोग उसे सुप्रीम गॉड फादर कहते हैं।

जैसे चींटी का बाप चींटी होता है। हाथी का बाप हाथी होता है डील–डौल वाला। साँप का बाप साँप ही होता है लम्बा–2। ऐसे ही आत्माओं का बाप भी बिंदु है। उस बिंदु का बड़ा आकार शिवलिंग बनाते हैं पूजा करने के लिए। नहीं तो बिंदी रखें, उसकी पूजा कैसे करेंगे? लुढ़क जायेगी। इसलिए बिंदु का बड़ा आकार शिवलिंग बनाते हैं, मन्दिर में रखके भगवान की पूजा करते हैं। उसको समझते हैं वह भगवान है। छोटे–2 शालीग्राम बनाते हैं वे आत्माएँ हैं। आत्माएँ छोटा काम करेंगी। परमात्मा बड़ा काम करेगा। बड़े काम को दिखाने के लिए उसको बड़ा शिवलिंग बनाते हैं और आत्माओं को छोटे–2 शालीग्राम बनाते हैं। जब रुद्र यज्ञ

रचते हैं तो भी ऐसे ही करते हैं। सैकड़ों, हज़ारों, लाखों की तादाद में छोटे–2 शालीग्राम बनावेंगे, मिट्टी के ही बनावेंगे! ये देह काहे से बनी हुई है? मिट्टी से। तो मिट्टी के छोटे–2 शालीग्राम बनाते हैं और शिवलिंग बहुत बड़ा बनावेगें! वो भी मिट्टी का बनावेंगे। इसका मतलब है कि वह आत्माओं का बाप परमात्मा भी जब इस सृष्टि पर आता है, तो किसी मिट्टी के चोले को धारण करता है, उसमें प्रवेश होता है। इसलिए गीता में लिखा है– "प्रवेष्टुम"(गीता 11/54) मैं प्रवेश करने योग्य हूँ। जैसे भूत–प्रेत प्रवेश कर जाते हैं; परन्तु मैं भूत–प्रेत नहीं हूँ। भूत–प्रेत तो वे आत्माएँ बनती हैं, जो पाप करती हैं। पाप आत्माओं को भूत–प्रेतों का चोला मिलता है। मैं तो अजन्मा हूँ! मैं बच्चे के रूप में गर्भ से जन्म नहीं लेता हूँ। भूत–प्रेत आत्माओं का हिसाब–किताब जब पूरा हो जावेगा तो वे बच्चे के रुप में जन्म लेंगी। मैं गर्भ में नहीं आता हूँ। इसलिए मुझे अजन्मा कहते हैं, अगर्भा कहते हैं। वह परमपिता–परमात्मा कब आते हैं? जब आत्मलोक से अपने आत्मा रूपी सब बच्चों को पार्ट बजाने के लिए इस सृष्टि पर भेज देते हैं। वे बच्चे इस सृष्टि पर आते रहते हैं, दुनियाँ की आबादी बढ़ती रहती है। सतयुग आदि से लेकर के आत्माएँ इस सृष्टि पर आ रही हैं।

सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग चार युगों से ये सृष्टि पसार होती है। जब चारों युग पूरे होते हैं तो इस सृष्टि पर संख्या बहुत बढ़ जाती है। तो (जब) ज़्यादा संख्या बढ़ेगी तब सृष्टि पर अशांति होगी या जब थोड़ी संख्या थी, तब अशांति थी? ज़्यादा संख्या बढ़ती है तो बहुत अशांति हो जाती है। आज दुनियाँ में हर आदमी अशांत है। लखापति! करोड़पति! अरबपति भी होगा वह भी अशांत है! बड़े–2 देशों के बड़े–2 शासनकर्ता वे भी अशांत हैं! सब भयभीत होते रहते हैं, पता नहीं दुनियाँ में कब क्या हो जाये! तो ऐसी अशांति के टाइम पर, जिसे कहते हैं कलियुग का अंत। तब कलियुग के अंत में वह परमपिता–परमात्मा इस सृष्टि पर आता है और आकर के हम बच्चों को अपना परिचय देता है कि तुम आत्मा हो, ज्योतिबिंदु आत्मा। जैसे आसमान में सितारे हैं, ऐसे ही तुम धरती के सितारे हो। एक–2 सितारे में रोशनी भरी हुई है। जब तक वह रोशनी है, तब तक इन आँखों में से रोशनी निकलती है। जब वह आत्मा रूपी रोशनी शरीर से बाहर निकल जाती है तो आँखें बटन हो जाती हैं। आखों की रोशनी खत्म हो जाती है।

परमात्मा आकर के पहली बात ये पढ़ाते हैं कि तुम सब स्टार मिसल, आसमान के सितारे के मिसल एक आत्मा हो। ये अपन को पक्का करो और दूसरों को भी देखो तो देह के रूप में मत देखो। आत्मा है, परमपिता–परमात्मा का बच्चा है। तो वह भी बच्चा, हम भी बच्चा। मन्दिर में जाते हैं तो हाथ जोड़कर कहते हैं– तुम मात–पिता हम बालक तेरे। अगर भगवान ही हमारा मात–पिता है तो हम आपस में क्या हुए? भाई–भाई हो गए। ये दृष्टि पक्की करनी है। ये आत्मा कभी स्त्री का जन्म लेती है, कभी पुरुष का जन्म लेती है। इस जन्म में ये चोला स्त्री का दिखाई पड़ता है। अगले जन्म में ये ही आत्मा पुरुष रूप धारण कर लेती है। मैं पुरुष हूँ! ये भान रहेगा और ये स्त्री है! इस रुप में देखा, तो आकर्षण पैदा होता है स्त्री पुरुष का; क्योंकि देह के रुप में देखा। काम विकार की उत्पत्ति हो जाती है। लेकिन जब ये बुद्धि में रहे कि मैं भी ज्योतिबिंदु आत्मा, ये भी ज्योतिबिंदु आत्मा, दोनों परमात्मा के बच्चे हैं। अगले जन्म में पता नहीं दोनों पुरुष के रुप में जन्म लेंगे, तो क्या होगें? क्या संबंध बन जएगा? भाई–2 का संबंध बन जाएगा। अभी जो आकर्षण है वह खत्म हो जावेगा।

ऐसे ही हम किसी को देखते हैं, ये भंगी है! देह के रुप में देख लिया। मैं ब्राह्मण हूँ! देह के रुप देख लिया। उसने थोड़ी सी असम्मान की बात कह दी, बस क्रोध आ गया! मुझ ब्राह्मण को तूने ऐसी बात कह दी, नीच जाति का कहीं का! बस! क्रोध पैदा हो गया। गालियाँ–गलौच! मार–पीट! ऊँच–नीच का कितना भेद–भाव पैदा हो जाता है देह के रूप में देखने से। अगर ओरिजनल/असली रूप में देखेंगे तो कोई भेद–भाव पैदा नहीं होगा। मैं गद्दी पर बैठा हूँ, मैं राजा हूँ! ये झाड़ू लगाने वाला मेहतर है! इसने थोड़ी सी उल्टी–सीधी

बात कह दी, चढ़ाओ इसको फाँसी पर! कितना जबरदस्त क्रोध आ जाता है! क्यों आया? क्या कारण हुआ? देह के रूप में देखा, अपने को देह के रूप में देखा। अगर अपने को आत्मा समझे तो पता नहीं पिछले जन्म में कोई भिखमंगा हो तो? जिसको भंगी के रूप में, झाड़ू लगाने वाले के रूप में देखा जा रहा है, पता नहीं पिछले जन्म में वह राजा हो तो? राजा हरिश्चन्द्र को चाण्डाल बनना पड़ा ना। भंगी बना की नहीं? आत्मा कभी राजा बनती है, कभी चाण्डाल भी बन जाती है। तो हमेशा असली रूप में देखने की आदत होनी चाहिए। ये सब भाँति–भाँति के जो चेहरे दिखाई दे रहे हैं, ये सब नकली हैं। असली नहीं हैं। असली तो आत्मा है, जो इन आँखो से दिखाई नहीं देती। परमपिता–परमात्मा भी इन आँखों से दिखाई नहीं देता। न आत्मा को देख सकते हैं, न परमात्मा को देख सकते हैं और न इस सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त को देख सकते हैं।

हाँ, जब हमारे अन्दर ये भावना पक्की हो जाएगी कि हम ज्योतिबिंदु आत्मा हैं। हमारी आत्मिक स्थिति जब पक्की हो जाएगी, ऐसी पक्की हो जाए जैसे परमपिता–परमात्मा सदैव आत्मिक रूप में रहने वाला है–तो किसी आत्मा को देखने मात्र से ही हम जान लेंगे कि इसके 84 जन्मों के चक्र का क्या–2 हिसाब है। कौन–से जन्मों में ये आत्मा क्या बनेगी और अपनी आत्मा का भी ज्ञान होगा। प्रैक्टिस की बात है। इसके लिए गीता में ये अक्षर आए हैं कि आत्मा का रूप क्या है "अणोः अणीयांसम् अनुस्मरेत् यः" (गीता 8/9) आत्मा अणु रूप है, ज्योति है। अणु मतलब अति सूक्ष्म कण। इतना सूक्ष्म है कि इन आँखों से दिखाई नहीं देता। जैसे किसी को मलेरिया बुखार आ जाए, उसका एक बूँद खून निकालकर के देखो, उस खून में इन आँखों से कीटाणु नहीं दिखाई देते हैं; लेकिन डॉक्टर अपने यंत्र से देखता है तो उसमें ढेर के ढेर कीटाणु दिखाई देते हैं। ऐसी बहुत सी चीज़ें होती हैं जो इन आँखों से देखने में नहीं आतीं; परंतु हम अपनी आँख को ऐसा यंत्र बनाएँ, जैसे शंकर को तीसरा नेत्र दिखाया जाता है।

कहते हैं कि शिव–शंकर एक हैं। बताओ भाई! पीछे बैठने वालों में से कोई बताओ, शिव–शंकर एक हैं या दो हैं? अरे, बताओ तो! कुछ तो बता दो! (किसी ने कहा– अलग–2 हैं।) अलग–2 हैं? लो, इन्होंने तो शिव–शंकर को अलग कर दिया। (किसी ने कहा– एक है।) एक हैं! दुनियाँ कहती है शिव–शंकर एक हैं; लेकिन बोलो, शिव–शंकर एक हैं, तो दो नाम क्यों रखे गए? शिव मतलब कल्याणकारी, शंकर मतलब संघारकारी। एक होता तो एक ही काम पक्का करेगा ना। जैसे कोई डॉक्टर होता है, स्पेशलिस्ट होता है आँखों का, कानों का तो ई.एन.टी डॉक्टर कहते हैं। वही काम वह पक्का करेगा। कोई चीर–फाड़ करने वाला डॉक्टर होता है, सर्जन होता है तो सर्जन का ही काम पक्का करेगा। दूसरी डॉक्टरी का काम उतना बढ़िया थोड़े ही कर पाएगा। तो शंकर का काम है संघार करना, सृष्टि का विनाश करना और शिव का काम है कल्याण करना। किसी का अकल्याण नहीं करता। सबका कल्याण करता है।

शिव का रूप लिंग के रूप में दिखाया जाता है। मन्दिर में जाएँगे तो शिवलिंग की पूजा करेंगे। ऐसे थोड़े ही कहा जाता है, शंकरलिंग। क्या कहा जाता है? शिवलिंग। क्योंकि वह सदैव बिंदु रूप में रहने वाला है। भक्तों ने पूजा करने की सुविधा के लिए उस बिंदु का बड़ा आकार बनाए दिया। वह कभी देह धारण नहीं करता है। शंकर को तो अपनी देह होती है। पुराने–2 मन्दिर में चले जाओ, बीच में शिवलिंग होगा और आस–पास सभी देवताओं की मूर्तियाँ रखी होंगी, उन मूर्तियों के बीच में शंकर का भी चित्र रखा होगा, मूर्ति रखी होगी। इससे साबित होता है कि चारों ओर बच्चे बैठे हुए हैं और बीच में उन आत्माओं का बाप शिव ज्योतिबिंदु शिवलिंग रखा हुआ है। वह हम सबका बाप है। हम सबको आकर के अपना परिचय देता है। बताता है कि बच्चे, मैं तुम्हारा बेहद का बाप हूँ। 84 के चक्कर में तुमने जो 84 बाप धारण किए, वे हद के बाप हैं। उन हद के बापों से तुम्हें हद का वर्सा मिलता है। लाख, दो लाख, दस लाख, पचास लाख, अरब, खरब मिल

जाएगा; लेकिन एक जन्म के लिए मिलता है। वह भी पक्का नहीं मिले, मिले, न मिले; लेकिन मैं तुम्हरा बेहद का बाप तुमको बेहद का वर्सा देता हूँ। वह कौन–सा बेहद का वर्सा है जो बाप आकर के देते हैं?

ऐसे तो दुनियाँ में बहुत बड़े–2 बाप हुए हैं। क्राइस्ट क्रिश्चियन्स का बाप है। क्रिश्चियंस उसे फादर कहते हैं। मोहम्मद मुसलमानों का बाप है। गुरुनानक सिक्खों का बाप। शंकराचार्य संन्यासियों का बाप। महात्मा बुद्ध बौद्धियों का बाप। ये कितने बड़े–2 बाप हो गये हैं दुनियाँ में। जिनकी बड़ी–2 जनरेशन फैली हुई है दुनियाँ में। चीन में, जापान में, बर्मा में, मलाया में, तिब्बत में कितने बौद्धी फैले हुए हैं! यूरोप में, अमेरिका में, ऑस्ट्रेलिया में कितने क्रिश्चियन्स फैले हुए हैं! दो सौ/ढाई सौ करोड़ क्रिश्चियन्स का बाप है क्राइस्ट; लेकिन ये सब बाप जो ग्रेटफादर्स कहे जाते हैं, महान धर्मपिताएँ कहे जाते हैं, वे हद के बाप हैं कि बेहद के बाप हैं, बताओ? क्या कहेंगे उनको? (किसी ने कुछ कहा) अरे! दो सौ/ढाई सौ करोड़ मनुष्यों का बाप, क्रिश्चियन्स का बाप वह हद का बाप हुआ? ये जो बड़े–2 धर्मपिताओं (के) नाम गिनाये यह हद के बाप हैं कि बेहद के बाप हैं? परमपिता–परमात्मा के मुकाबले उनको हद का बाप कहेंगे। क्यों? क्योंकि परमापिता–परमात्मा को दुनियाँ की हर जनरेशन का व्यक्ति मानता है। क्रिश्चियन्स भी कहते हैं, ओ गॉडफादर! मुसलमान कहते हैं ओ अल्लाह! ओ खुदा! हिन्दू लोग परमपिता कहते हैं, भगवान कहते हैं। तो वह तो दुनियाँ की जितनी जनरेशन है.....। आज दुनियाँ की जनरेशन 500/600 करोड़ से ऊपर पहुँच गई। 500/600 करोड़ जनरेशन का वह बाप है, इसलिए वह बेहद का बाप है। ऐसे नहीं (कि) वह 500/600 करोड़ आत्माओं को ज्ञान देता है कि तुम बिंदु–2 आत्मा हो, जन्म देता है; बाप का काम जन्म देने का ही नहीं है; बाप का काम है बच्चा जब बड़ा हो जाए तो उसे वर्सा भी दे। बाप वह जो बच्चों को वर्सा देवे। वह बेहद का बाप बेहद के बच्चों को जन्म देता है और उन बेहद के बच्चों को सुख और शांति का बेहद का वर्सा देता है। एक जन्म का नहीं, जन्म–जन्मान्तर का वर्सा देता है। वे धर्मपिताएँ इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, गुरुनानक, मोहम्मद, शंकराचार्य ये कोई भी स्वर्ग नहीं बना पाते। एक भगवान ही है जो कलियुग के अन्त में इस सृष्टि पर आकर के नर्क की दुनियाँ को स्वर्ग बनाकर के जाता है। ऐसा बेहद का वर्सा देता है!

ये बेहद स्वर्ग का वर्सा कीड़े–मकोड़ों को अच्छा नहीं लगेगा। नाली के कीड़े होते हैं न, उन कीड़ों को निकालकर के धूप में साफ–सुथरी जगह में रख दो, तिलमिला के मर जाएँगे। वह हँसी उड़ाएँगे। ऐसी कीड़े–मकोड़े जैसी आत्माएँ भी इस दुनियाँ में हैं, स्वर्ग के सुखों की भर्त्सना करती हैं/ग्लानि करती हैं, जो स्वर्ग का सुख देने वाला भगवान इस सृष्टि पर आता है। भगवान को सारी दुनियाँ का हर मनुष्य मात्र मानता है। ये एटमबॉम्ब बनाने वाले बड़े–2 वैज्ञानिक, जो बड़े अंहकार में डूबे हुए हैं! जब दुनियाँ में भूकंप आते हैं, सारी पृथ्वी डाँवा–डोल होती है, बड़े–2 ज्वालामुखी फूटते हैं, उन ज्वालामुखी में से उगलती हुई आग दुनियाँ में चारों तरफ फैलती है, तब वे वैज्ञानिक भी डर जाते हैं! उस टाइम उनके मुँख से भी निकलता है, ओ गॉडफादर!

आज से 70 साल पहले एटमबॅम्बों का नाम–निशान नहीं था दुनियाँ में। वैज्ञानिक भी नहीं जानते थे, एटमबॉम्ब क्या चीज़ होती है! बॉम्ब का नाम तो सुना है? 70 साल पहले बॉम्ब का नाम था या नहीं, बोलो? (किसी ने कहा– नहीं था बाबा) नहीं था? अरे, काहे के लिए झूठ बोलते हो! ये काँवड़ियाँ, काँवर लेकर के जाते हैं, तो चिल्लाते जाते हैं कि नहीं? हर–हर बम–बम! जब लड़ाइयाँ होती थीं, तो हिंदू–मुसलमान बोलते थे ना, हर–हर बम–बम! जय माँ काली! शंकर के साथ ये बम शब्द जुड़ा हुआ था ना। इसका मतलब है कि जब शिव–शंकर इस सृष्टि पर प्रत्यक्ष होते हैं, तब ये बॉम्ब भी बनना शुरू होते हैं। 70 साल के अन्दर ये बॉम्ब बनना शुरु हुए हैं। ये शंकर की प्रेरणा से बनवाये जा रहे हैं। नहीं तो इतने विश्व युद्ध हो चुके! पहला विश्व युद्ध हुआ, दूसरा विश्व युद्ध हुआ और तीसरा विश्व युद्ध दुनियाँ में होने वाला है, जो हिन्दुस्तान

और हिन्दुस्तान के आस–पास के देशों में होगा और चौथा विश्व युद्ध भी होगा, जिसमें ये बॉम्ब–पटाखे इकट्ठे छूट पड़ेंगे। ये बॉम्ब हमारे घर की सजावट के लिए नहीं बने हैं। ये बॉम्ब दुनियाँ के विनाश के लिए बने हुए हैं। लोगों को तो पता नहीं है, अपनी–2 प्लैनिंग करते चले जा रहे हैं। बड़ी–2 ऊँची–2 बिल्डिंगे, अटारियाँ बनाते चले जा रहे हैं। बड़ी–2 कॉलोनियाँ बनाते चले जा रहे हैं। समझते हैं इसी दुनियाँ में स्वर्ग है। कैंसर होता है तो लिये–2 फिरते हैं डॉक्टरजी, बचाए लो! सब स्वर्ग धरा रह जाता है।

भगवान जो नई दुनियाँ रचता है उसमें कोई भी बीमारी नहीं होती। कोई भी प्रकार का दुःख नहीं होता। कोई भी प्रकार का भय नहीं होता। कोई भी प्रकार की अशांति नहीं होती। सुख–शांति से भरपूर दुनियाँ बनाकर के जाता है। कोई कहते हैं– ऐसा न कभी हुआ है, न होगा। अरे, जब दिन का सोझरा हो सकता है और रात का घोर घुप्प अंधेरा हो सकता है। दोनों बातें विपरीत हो सकती हैं कि नहीं? होती हैं। तो फिर दुनियाँ में घोर सुख और घोर दुःख भी हो सकता है। ये सतयुग की जो दुनियाँ थी, जहाँ लक्ष्मी–नारायण का राज्य था, उन लक्ष्मी–नारायण के राज्य में कोई भी दुःख नहीं था। इसलिए 33 करोड़ देवताओं में से एक भी ऐसा देवता नहीं है जिसकी ग्लानि न हो। एक लक्ष्मी–नारायण ही ऐसे हैं जिनकी दुनियाँ में कोई ग्लानि नहीं है। शास्त्रों में भी कहीं कोई ग्लानि नहीं है। ऐसे लक्ष्मी–नारायण का राज्य भगवान आकर के स्थापन करता है। इसलिए गीता में लिखा हुआ है– हे! अर्जुन, मैं ऐसा ज्ञान देता हूँ जो तू नर अर्जुन नारायण बने और हे! द्रौपदी नारी, तू इस ज्ञान को पाकर के नारायणी बनेगी। मनुष्य को देवता बनाना ये भगवान का काम है। नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनाना मनुष्य गुरुओं का काम नहीं है।

कोई नास्तिक कहते हैं, अरे! भगवान आकर क्या करेगा? अरे! भगवान तो आकर वह करता है जो दुनियाँ में कोई मनुष्य मात्र नहीं कर सकता। दुनियाँ में बड़े–2 महात्वाकांक्षी हुए– हिटलर, नेपोलियन, अलक्ज़ेंडर उन्होंने इतनी हिम्मत दिखाई कि हम सारी दुनियाँ पर राज्य करेंगे और सारी दुनियाँ पर हिंसा व्याप्त करके तहस–नहस कर दिया लोगों को; लेकिन दुनियाँ के ऊपर राज्य नहीं कर सके। ये कायदा नहीं है, ये कानून नहीं है कि कोई हिंसा के आधार पर सारी दुनियाँ में राज्य कर सके। भगवान ही ऐसा कानून बनाता है, जो कानून बताता है कि अहिंसा के आधार पर लक्ष्मी–नारायण ने सारी दुनियाँ के ऊपर राज्य किया था। वे विश्व के मालिक थे। वे विश्व के मालिक लक्ष्मी–नारायण ही अपने पुरुषार्थी जीवन में शंकर–पार्वती कहे जाते हैं। इसलिए शंकर का एक टाइटिल भी है– हर–हर महादेव शम्भो काशी विश्वनाथ गंगे। वह सारे विश्व का नाथ बनता है; लेकिन प्यार के आधार पर दुनियाँ को कन्ट्रोल करता है, हिंसा के आधार पर नहीं। ज्ञान के आधार पर दुनियाँ को कन्ट्रोल करता है।

शंकर और शिव का संबंध क्या है वो तो आप लोग भी जानते हैं। सब देवताओं को देवता कहेंगे। क्या कहेंगे? देव कहेंगे, देवी कहेंगे और शंकर को क्या कहते हैं? महादेव। सब देवताओं में बड़ा देवता। ज़रूर बड़ा पुरुषार्थ किया होगा। जब भगवान ने आकर के राजयोग सिखाया, तो संसार में राजयोग का बड़े ते बड़ा पुरुषार्थ करने वाला शंकर ही साबित हुआ, जो शंकर शिव के समान निराकारी स्टेज धारण कर लेता है। इसलिए एक शंकर का नाम शिव के साथ जोड़ा जाता है। 33 करोड़ देवताओं में से कोई का भी नाम शिव के साथ नहीं जोड़ा जाता। शिव कृष्ण नहीं कहेंगे, शिव राधा नहीं कहेंगे, शिव राम नहीं कहेंगे। क्या कहेंगे? शिव–शंकर भोलेनाथ।

दुनियाँ की जितनी भी 500/700 करोड़ मनुष्य आत्माएँ हैं, शंकर उन सबका/सबके मनुष्य शरीरों का बाप है। वह दुनियाँ का पहला मनुष्य है, जिसका कोई बाप नहीं होता। उस पहले मनुष्य को दुनियाँ के सब धर्म के लोग मानते हैं। अंग्रेज़ लोग दुनियाँ के उस पहले मनुष्य का नाम देते हैं– 'एडम'। मुसलमान लोग दुनियाँ के पहले मनुष्य का नाम देते हैं– 'आदम'। जैनी लोग उसका नाम देते हैं– 'आदिनाथ'। हिंदू उसे कहते हैं–

'आदिदेव'। गीता में लिखा है– "त्वं आदिदेवः पुरुषः पुराणः" (गीता 11/38)। सृष्टि के उस पहले मनुष्य को दुनियाँ के सब लोग मानते हैं। वही आदिदेव महादेव है! जिस महादेव में परमपिता शिव, जो सदैव परमधाम का रहने वाला है, उसमें आकर के प्रवेश करता है और प्रवेश करके मुख से ज्ञान सुनाता है। हम आत्माओं को ज्ञान देता है। ज्ञान के ऐसे फॉर्मुले बताता है अगर बुद्धि में मनन–चिंतन–मंथन चलता रहे, तो कोई भी आत्मा आत्मिक स्थिति में रहकर के, प्रैक्टिस करके अपने 84 जन्मों को जान सकती है।

आत्मा पार्टधारी है। ये दुनियाँ एक रंगमंच है। इस रंगमंच पर हम आत्मा नाटक कर रहे हैं। कभी कोई चोला धारण करते हैं, कभी कोई चोला धारण करते हैं। 84 के चक्र में हम 84 चोले धारण करते हैं। सब आत्माएँ 84 के चक्र में नहीं आती हैं। आत्मलोक से/परमात्मलोक से आत्माओं का आना शुरु होता है, तो सतयुग में थोड़ी आत्माएँ आती हैं, फिर त्रेता में और ज़्यादा आती हैं, फिर द्वापर में और ज़्यादा आत्माएँ उतरती हैं और कलियुग में ढेर की ढेर आत्माएँ उतर पड़ती हैं। अंत में बहुत मनारा हो जाता है। अशांति फैल जाती है। दुःख फैल जाता है। मनुष्यों को रहने की जगह नहीं मिलती तो एक के ऊपर एक आदमी रहता है। एक मंज़िल बनाएँगे, फिर ऊपर दूसरी मंज़िल, फिर तीसरी, सौ–2 मंज़िल के मकान बनाये हुए हैं, इतनी आबादी बढ़ती जा रही है और अभी और तेज़ी से बढ़ेगी, जब तक भगवान का कार्य चल रहा है इस सृष्टि पर।

भगवान का क्या कार्य है? भगवान आकर के अपने तीन बड़ल्ले बच्चों से तीन कार्य कराते हैं– ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों की स्थापना। ब्राह्मण उन्हें कहा जाता है जो ज्ञान लेते हैं और दूसरों को ज्ञान देते हैं। किसका ज्ञान? भगवान का ज्ञान। भगवान आया हुआ है तो भगवान क्या देगा? परमधाम से आता है तो आकर के लड्डू–पेड़ा बाँटेगा क्या? वह तो है ही बिंदी। वह जन्म–मरण के चक्र में नहीं आता है, इसलिए उसकी बुद्धि में सारी सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान है। हम जन्म–मरण के चक्र में आते हैं, इसलिए हम भूल जाते हैं। हम मनुष्य आत्माएँ सब अज्ञानी बन जाती हैं। हम अज्ञानी मनुष्य आत्माओं को भगवान आकर के नर से नारायण जैसा देवता बनाता है। अब देवता बनने की इच्छा सबको थोड़े ही होगी। जैसे स्कूलों में पढ़ाई पढ़ते हैं, कोई डॉक्टरी की पढ़ाई पढ़ते हैं, कोई इंजीनियरिंग की पढ़ाई पढ़ते हैं, कोई मास्टरी की पढ़ाई पढ़ते हैं, कोई वकालत की पढ़ाई पढ़ते हैं, तो क्या सब इंजीनियर, डॉक्टर, मास्टर बन जाते हैं? नहीं। जो पढ़ेंगे सो बनेंगे। दुनियाँ में जो पढ़ाई पढ़ाई जाती है वह अल्पकाल की प्राप्ति की पढ़ाई पढ़ाई जाती है। एक जन्म के लिए इंजिनियर, डॉक्टर, मास्टर बनावेंगे। वह भी बने, बने, न बने। कितने एल.एल.बी. वकालत पास करने वाले हैं! कोर्ट में जाते हैं, चवन्नी नहीं कमा के लाते हैं। तो पढ़ाई पढ़ने से क्या फायदा हुआ? भगवान तो आकर के वह पढ़ाई पढ़ाता है, जो कभी बेकार नहीं जाती। वह पढ़ाई है मनुष्य से देवता बनने की पढ़ाई। ये मनुष्य को देवता बनाने का स्कूल है।

जो थोड़ा भी भगवान के मुँख से सुनेंगे, वे स्वर्ग में जाकर देवता ज़रूर बनेंगे। ये गैरन्टी है; परन्तु भगवान को पहचानना पड़ेगा। ऐसे नहीं (कि) घर में से निकले, सामने आकर बैठ गये। किसी ने कह दिया ये भगवान है और मान लिया, हाँ ये भगवान है। आज कह देंगे भगवान है और कल कहेंगे नहीं, नहीं, भगवान नहीं। ये तो हमारी लड़की को ऐसा कर दिया, वैसा कर दिया, ये तो शैतान है। फिर शैतान बनाकर भाग खड़े होंगे? ज्ञान से समझो। भगवान आकर के ज्ञान देता है, प्रूफ देता है। प्रूफ और प्रमाण के आधार पर समझो कि भगवान कैसे भगवान होता है। भगवान में और इंसान में बहुत भारी फ़र्क होता है। भगवान आकर के आज के राक्षसों को पहले इंसान बनाता है। जो आत्मिक स्थिति की शान में रहते हैं, उनको इंसान कहा जाता है। नहीं तो इंसान नहीं है, हैवान हैं/शैतान हैं।

दो महान शक्तियाँ हैं– एक शिव और एक शंकर। शिव है आत्माओं का बाप बिंदी–4 आत्माएँ। तो सीधी सी बात है चींटी–5 आत्माएँ, चींटियों का बाप चींटा। वह भी चींटी जैसा ही होगा। बिंदु–2 आत्माओं का बाप भी बिंदी और मनुष्यों का बाप मनुष्य। हाथ, पाँव, नाक, आँख, कान सबकुछ होना चाहिए। वह शंकर मनुष्य सृष्टि का पहला बाप है, जिसका कोई बाप नहीं। उसको कोई ज्ञान नहीं दे सकता। उस शंकर को कोई जन्म नहीं दे सकता। हद के जन्म की बात नहीं है, ज्ञान का जन्म, ब्राह्मण जन्म। जैसे कहते हैं कि ब्राह्मण के घर में बच्चा जन्म ले, तो जन्म लेने से ब्राह्मण नहीं होता। जब उसका यज्ञोपवीत संस्कार कराते हैं, तब ब्राह्मण होता है। ऐसे ही ये सारी सृष्टि शूद्र बन जाती है कलियुग के अंत में। तुलसीदास ने भी कहा है– भये वर्णसंकर सबै। सब वर्णसंकर हो गए। पता ही नहीं चलता कौन भंगी है, कौन मुसलमान है, कौन ठाकुर है, कौन वैश्य है। सब मिक्स होकर के एक हो गये हैं। सारी दुनियाँ व्यभिचारी बन गई। श्रेष्ठ आचरण रहा ही नहीं, जो देवताओं का श्रेष्ठ आचरण होता है। वह दुनियाँ भूल चुकी है।

देवी–देवताएँ अव्यभिचारी होने के कारण जन्म–जन्मान्तर तक सुखी रहते हैं। भगवान आकर के वो अव्यभिचारी दुनिया स्थापन करते हैं। ऐसी दुनियाँ बनाते हैं, जिस दुनियाँ में प्रकृति हमारी दासी होगी। प्रकृति मतलब कुदरत। आज की कुदरत तो हमको कितना दुःख दे रही है। भीषण अकाल पड़ता है, पानी की बूँद नहीं मिलती। नदियों में बाढ़ आती है, गाँव के गाँव बह जाते हैं। भूकंप आते हैं, कितना नुकसान हो जाता है। दस साल पहले गुजरात में भूकंप आया था। पूरा भुज का भुज गाँव का गाँव उजड़ गया। ये तो छोटे–2 छुटपुट–2 प्रकृति के प्रकोप हो रहे हैं। अभी जब मनुष्यों की बुद्धि खराब होगी, ये एटमबॉम्ब फोड़ने लग पड़ेंगे, तब पृथ्वी डाँवा–डोल होना शुरू हो जाएगी, बैलेन्स बिगड़ जाएगा और ढेर के ढेर भूकंप आवेंगे। ये जो इधर–उधर पहाड़ देखते हैं, ये पहाड़ ऐसे ही थोड़े ही बन गए हैं। भूकंप आते हैं, ज़मीन के अंदर से ढेर सारा गरम–2 लावा निकलता है! आग की आग उगलती है ज़मीन! वह लावा का पहाड़ बन जाता है। तब ये पहाड़ तैयार हुए हैं। हिमालय पहाड़ देखो कितना ऊँचा बना हुआ है! ये ऐसे ही थोड़े ही बन गया है।

इस पृथ्वी पर दो बार विनाश बरपा होता है। सतयुग–त्रेता जब पूरा होता है, सुख की दुनियाँ पूरी होती है, स्वर्ग की दुनियाँ जब खलास होती है, नारायण का राज्य और राम का राज्य खलास होता है, त्रेता के अन्त में दुनियाँ का आधा विनाश होता है, ये जो अभी पहाड़ देख रहे हैं इधर–उधर, हिमालय पहाड़ से लेकर के छोटे–मोटे पहाड़, ये सब उस अर्धविनाश में भूकंप से बने थे। फिर द्वापर–कलियुग है दुःख की दुनियाँ। कलियुग के अन्त में जो महाविनाश होगा वो सम्पूर्ण विनाश होगा। पृथ्वी चारों ओर आग उगलेगी! भूकंप लाएगी! दुनियाँ का वातावरण बहुत गरम हो जाएगा। पृथ्वी के उत्तर की तरफ और दक्षिण की ओर जो मीलों ऊँचे बर्फ के पहाड़ हैं, वो सब पिघलकर के समुद्र में आ जाएँगे। समुद्र का स्तर ऊँचा हो जाएगा। ये बम्बई, मद्रास सब डूब जावेंगे, जो समुद्र के किनारे हैं। ये पहले भी नहीं थे। ये अमेरिका, ये ऑस्ट्रेलिया पहले भी नहीं थे। आज से 500 साल पहले मनुष्यों की बुद्धि में भी अमेरिका का नाम नहीं था। आज से 300 साल पहले मनुष्यों की बुद्धि में, मन में भी नहीं था कि ऑस्ट्रेलिया नाम का भी कोई महाद्वीप होता है। ये सब खलास हो जावेंगे। हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई ये सब खत्म हो जावेंगे। सिर्फ अपन को आत्मा समझने वाली आत्माएँ रह जावेंगी। आत्मिक स्थिति में रहने वाले देवताएँ इस सृष्टि पर रहेंगे। जो आत्मिक स्थिति का पहला पाठ पक्का नहीं करेंगे, (वे) इस दुनियाँ के विनाश की विभीषिका में खत्म हो जावेंगे। धर्मराज की सज़ाएँ खाएँगे और सज़ाएँ खा–खाकर के, फिर परमधाम सब आत्माएँ वापस जावेंगी।